पवित्र आत्मा क्या करता है?

पवित्र आत्मा पिता और पुत्र के साथ ईश्वरत्व में एक है (कुलुस्सियों 2:9)। वह एक ईश्वरीय, आत्मिक व्यक्तित्व है। वह केवल ''सामर्थ की अभिव्यक्ति'' नहीं है।

यद्यपि पवित्र आत्मा का काम पूरी ही बाइबल में मिलता है, परन्तु ''त्रिएक'' की शिक्षा को पुराने नियम में इतने स्पष्ट रूप से परिभाषित नहीं किया गया जितना कि नये नियम में। इस संक्षिप्त अध्ययन में हम ध्यान देना चाहते हैं कि पवित्र आत्मा ने नये नियम में विभिन्न लोगों को शक्ति कैसे दी।

हम कुंवारी से यीशु के जन्म (मत्ती 1:20), उसके बपतिस्मे (मत्ती 3:16), उसकी परीक्षा (मत्ती 4:1), उसकी व्यक्तिगत सेवकाई (लूका 4:14; मत्ती 12:28), उसकी मृत्यु (इब्रानियों 9:14), और अन्य बातों के विषय में पवित्र आत्मा के साथ उसके सम्बन्ध के बारे में और दूसरी कई बातों पर काफ़ी समय लगा सकते हैं। यीशु के पास *असीमित* सामर्थ थी, और उसने अपनी शक्तियों में से कुछ को दूसरों में बांटा (मत्ती 10:1)। परन्तु, हमारी विशेष रुचि, यीशु की मृत्यु, गाड़े जाने और जी उठने के बाद मसीही युग में पवित्र आत्मा के काम में होगी।

यीशु ने प्रतिज्ञा की कि अपने जाने के बाद, वह पवित्र आत्मा को भेजेगा (यूहन्ना 14:16, 17, 26; तु. 15:26; 16:13)। यह ध्यान रखते हुए कि यीशु की सामर्थ *असीमित* थी और मनुष्य की *सीमित,* हम उस प्रतिज्ञा के पूरा होने की समीक्षा करना चाहते हैं।

प्रदर्शन

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा

पवित्र आत्मा के प्रत्येक प्रदर्शन के सम्बन्ध में, हम चार प्रश्नों अर्थात ''कौन?''; ''कैसे?''; ''क्या?''; और ''क्यों?'' के उत्तर देना चाहते हैं।

(1) इस प्रदर्शन को प्राप्त करने वाला *कौन* था? पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पहले यीशु के *प्रेरितों* को मिला। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने इस घटना की पूर्व-सूचना दी थी (मत्ती 3:11,12)। यीशु ने और प्रतिज्ञाओं के साथ यूहन्ना की बात पूरी की (लूका 24:46-49; प्रेरितों 1:4, 5, 8क)। प्रेरितों 2 में पवित्र आत्मा (2:1-4) प्रेरितों पर उतरा (1:26-2:1), जो कि भविष्यवाणी का पूरा होना था (2:16, 17क)। यह भविष्यवाणी का प्रारम्भिक रूप में पूरा होना था, परन्तु प्रेरितों 2 अध्याय में पवित्र आत्मा का बपतिस्मा केवल *यहूदियों* को मिला था। बाद में, पवित्र आत्मा *अन्यजातियों* के प्रतिनिधि अर्थात कुरनेलियुस और उसके घराने को मिला (10:44-48)। पतरस ने ज़ोर दिया कि यह वैसे ही था जैसे प्रेरितों 2 में हुआ था (11:15-17)।

(2) यह प्रदर्शन *कैसे* दिया गया? यह *सीधे परमेश्वर की ओर से* आया।

(3) इस प्रदर्शन में *क्या* था? प्रेरितों को *अद्‌भुत कार्य करने की शक्ति* दी गई थी। अद्‌भुत कार्य करने की शक्ति का मनुष्यों को देना यह अब तक का सबसे बड़ा प्रदर्शन था। (कुरनेलियुस और उसके घराने को भी भाषाएं बोलने की चमत्कारी योग्यता दी गई थी, हमें कुरनेलियुस और उसके घराने पर पवित्र आत्मा के बहाये जाने की कोई और जानकारी नहीं है।)

(4) यह प्रदर्शन *क्यों* दिया गया? शामिल लोगों का पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से उद्धार नहीं हुआ (प्रेरितों 11:14, 15), न ही इसने उन्हें पाप रहित बनाया (गलतियों 2:11-14)। सभी चमत्कारी प्रदर्शनों की तरह ही, पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से आत्मा की प्रेरणा पाए हुए प्रचारकों के संदेश को विश्वसनीयता मिली (मरकुस 16:20; इब्रानियों 2:4)। पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से एक और उद्देश्य पूरा हुआ, इसने *आगे की कार्यवाही का मार्ग प्रशस्त कर दिया।* प्रेरितों 2 अध्याय में पवित्र आत्मा के बपतिस्मे ने प्रेरितों को सुसमाचार के प्रचार के साथ आगे बढ़ने का संकेत दिया (लूका 24:46-49); प्रेरितों 10 और 11 में, इसने अन्यजातियों में प्रचार के साथ आगे बढ़ने का रास्ता खोला। (इसने उन्हें भी *योग्य ठहराया* जिन्होंने इसे वह काम करने के लिए पाया था जो परमेश्वर उनसे करवाना चाहता था।) यह नये नियम के समयों में हर रोज़ होने वाली घटना *नहीं* थी (प्रेरितों 11:15); केवल ये दो घटनाएं ही दर्ज हैं।

''हाथ रखने का'' प्रदर्शन

''हाथ रखने का'' प्रदर्शन पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से भिन्न है। यह प्रेरितों के हाथ रखने से मिलता था, जबकि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा सीधे परमेश्वर की ओर से मिला, न कि किसी मनुष्य के द्वारा।

कलीसिया के आरम्भिक दिनों में, केवल प्रेरित ही आश्चर्यकर्म करने वाले माने जाते थे (प्रेरितों 2:43; 3:4-8; 5:12)। परन्तु, बाद में, विशेष कामों के लिए पुरुषों का चयन किया गया, और प्रेरितों ने उन पर अपने हाथ रखे। वे लोग जिन पर हाथ रखे गए थे, आश्चर्यकर्म तो कर सकते थे (प्रेरितों 6:6, 8; 8:6; तु. 19:6), लेकिन इस दान को दूसरों पर हाथ रखकर आगे नहीं दे सकते थे (8:14-17)।

पवित्र आत्मा के बपतिस्मे से प्रेरितों को काफ़ी दान मिले, लेकिन जिन पर प्रेरितों ने हाथ रखे थे, उनको उनसे और सीमित दान दिए गए (तु. 1 कुरिन्थियों 12:8-10)।

(1) फिर, इस प्रदर्शन को पाने वाला *कौन* था? *कुछ मसीही* - विशेषकर जिन पर प्रेरितों ने हाथ रखे।

(2) यह प्रदर्शन *कैसे* दिया गया? *प्रेरितों के हाथ रखने से।*

(3) इस प्रदर्शन में *क्या* था? इस प्रदर्शन में *चमत्कारी शक्ति* भी शामिल थी, परन्तु इसका उद्देश्य *सीमित* था।

(4) आश्चर्यकर्म करने के लिए यह विशेष शक्ति *क्यों* दी गई? यह नये नियम के

पवित्र आत्मा के तीन प्रदर्शन			
	पवित्र आत्मा का बपतिस्मा	**प्रेरितों द्वारा हाथ रखना**	**पवित्र आत्मा का अन्तर्निवास**
किसे?	कुछ चुने हुए: प्रेरित कुरनेलियुस	कुछ मसीही	*सभी* मसीही
कैसे?	सीधे परमेश्वर से पाया	प्रेरितों के हाथ रखने से पाया	पानी में बपतिस्मे के द्वारा पाया
क्या?	आश्चर्यकर्म करने की शक्ति	सीमित आश्चर्यकर्म करने की शक्ति	चमत्कारी *नहीं* परन्तु समयोचित
क्यों?	आगे बढ़ने (और योग्य होने) के लिए हरी झण्डी देने के लिए	नये नियम के सम्पूर्ण होने तक ''रिक्त स्थान भरने'' के लिए	मसीहियों की सहायता करने और उन्हें दृढ़ करने के लिए
कब?	प्रेरितों के जीवनकाल के लिए, अस्थाई	प्राप्तकर्त्ताओं के जीवन काल के लिए, अस्थाई	समस्त मसीही युग के लिए – *आज के लिए*

पूरा होने के ''अन्तर को भरने के लिए'' दी गई। नये नियम का अस्तित्व, जिस रूप में हम जानते हैं, नहीं था। कलीसिया की स्थापना के बीस वर्ष बाद हमारे नये नियम की पुस्तक का लिखा जाना आरम्भ हुआ और उसके साठ वर्ष से पहले तक यह सम्पूर्ण नहीं हुआ था। प्रेरित आत्मा की प्रेरणा से एक ही समय में हर जगह शिक्षा नहीं दे सकते थे। प्रेरितों की अनुपस्थिति में, दूसरों को विशेष दान देने ज़रूरी थे। इनमें से कुछ दानों से उन्हें परमेश्वर की शिक्षा मिली; अन्य दानों ने उस शिक्षा को विश्वसनीय बनाया (इब्रानियों 2:3, 4)। आरम्भिक कलीसिया से इन दानों का वही सम्बन्ध था, जो नये नियम का आज है।

पवित्र आत्मा का अन्तर्निवास

आइए पहले वर्णन किए गए दो प्रदर्शनों की आत्मा के अन्तर्निवास के साथ तुलना करने के लिए संक्षिप्त समीक्षा करें:

(1) यह प्रदर्शन *किसे* प्राप्त हुआ? यह *सभी मसीहियों* के लिए था (प्रेरितों 2:38; 5:32)।

(2) यह प्रदर्शन *कैसे* दिया गया था? यह तब मिला *जब मसीहियों ने पानी में (डुबकी का) बपतिस्मा लिया था* (प्रेरितों 2:38)।

(3) यह प्रदर्शन *क्या* था? यह अन्य दो प्रदर्शनों की तरह *चमत्कारी* नहीं था, बल्कि यह परमेश्वर के *पूर्वप्रबन्ध* का ही एक भाग था (देखिए रोमियों 8:28)।

(4) यह प्रदर्शन *क्यों* दिया गया था? यह लोगों को मसीही बनाने के लिए नहीं, बल्कि इसलिए दिया गया था क्योंकि वे मसीही थे (गलतियों 4:6)। यह *मसीहियों को सामर्थ देने और सहायता* देने के लिए दिया गया था (रोमियों 8:2, 11, 13, 15, 16, 26, 27)।

क्या आज भी ये प्रदर्शन होते हैं?

इन प्रदर्शनों के सम्बन्ध में हमारे पास एक अन्तिम प्रश्न है: *कब*? विशेषकर, यह कि इन प्रदर्शनों ने समाप्त कब होना था?

पहले दो प्रदर्शन *अस्थाई* थे और समाप्त हो चुके हैं। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा *प्रेरितों के जीवन काल के लिए* था। याद रखें कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा एक प्रतिज्ञा थी न कि आज्ञा। यह कुछ विशेष लोगों के लिए थी, न कि सभी के लिए। प्रतिज्ञा के पूरा होने के साथ ही इसका उद्देश्य भी पूरा हो गया, और यह प्रतिज्ञा पूरी हो चुकी है। पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के अन्तिम लिखित प्रदर्शन के बीस या इससे अधिक वर्ष बाद पौलुस ने कहा कि केवल *एक* ही बपतिस्मा है (इफिसियों 4:5)। क्योंकि मसीह के लौटने तक (मत्ती 28:19, 20) मनुष्यों को, पानी का बपतिस्मा (प्रेरितों 8:36-39; 10:47, 48) ही लेना आवश्यक है, इसलिए अवश्य ही यह वही एक बपतिस्मा है जिसकी बात पौलुस ने की। आज किसी को भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा नहीं मिलता; आज कोई भी वह आश्चर्यकर्म नहीं कर सकता, जो प्रेरितों ने किए थे।

पुन:, ''हाथ रखने का'' प्रदर्शन *प्राप्तकर्त्ताओं के जीवनकाल के लिए* था। जब अन्तिम प्रेरित मर गया, तो सामर्थ देने का यह साधन भी जाता रहा। नया नियम ज़ोर देता है कि

चमत्कारी दान अस्थाई थे (1 कुरिन्थियों 13:8-10; याकूब 1:25)। दूसरी ओर, परमेश्वर का वचन स्थिर रहता है (1 पतरस 1:24, 25)।

फिर, हम तीसरे प्रदर्शन, अर्थात पवित्र आत्मा के अन्तर्निवास का क्या निष्कर्ष निकालें? यह सम्पूर्ण मसीही युग के लिए है; *अर्थात यह आज के लिए है।* पवित्र आत्मा का दान हर उस व्यक्ति को दिया जाता है जो वचन के अनुसार पानी में बपतिस्मा लेता है (प्रेरितों 2:38) और पानी का बपतिस्मा मसीही युग के अन्त तक रहेगा (मत्ती 28:19, 20)। इस प्रकार यह दान मसीही युग के अन्त तक रहेगा।

प्रेरितों के काम में पवित्र आत्मा के काम के अपने अध्ययन में, हम अब इस बात पर आते हैं कि पवित्र आत्मा क्या करता रहता है अर्थात यह नहीं कि उसने क्या किया, न यह कि वह क्या कर सकता है या क्या कर सकता था, बल्कि यह कि वह *आज क्या करता है।* इस प्रश्न के उत्तर के लिए कि ''पवित्र आत्मा क्या करता है?'' जानकारी का हमारा स्रोत परमेश्वर का वचन होगा। साफ़ बात तो यह है, कि मनुष्यों की साक्षी अविश्वसनीय है। क्योंकि पवित्र आत्मा ने बाइबल लिखने की प्रेरणा दी (2 पतरस 1:21; यूहन्ना 16:13; 1 कुरिन्थियों 7:40; इफिसियों 3:5; प्रकाशितवाक्य 2:7), इसलिए अपने काम के सम्बन्ध में वचन में पवित्र आत्मा की अपनी व्यक्तिगत साक्षी मिलती है।

हम इस पर विचार करना चाहते हैं कि पवित्र आत्मा कलीसिया के बाहर के पापी के लिए क्या करता है और वह एक मसीही के लिए क्या करता है।

पवित्र आत्मा कलीसिया के बाहर के पापी के लिए क्या करता है?

एक प्रसिद्ध शिक्षा है कि इसके पहले कि कलीसिया के बाहर का कोई पापी परमेश्वर के उद्धार को ग्रहण करे, पवित्र आत्मा को प्रत्यक्ष रूप से कार्य करना चाहिए। जॉन कैल्विन ने सिखाया कि यह ज़रूरी है क्योंकि बिल्कुल ही भ्रष्ट व्यक्ति पवित्र आत्मा के प्रत्यक्ष कार्य करने के बिना परमेश्वर के प्रेम को ग्रहण नहीं कर सकता (पवित्र आत्मा के इस प्रत्यक्ष कार्य को केवल चुने हुए पर आना माना जाता था)। तथापि, बाइबल यह नहीं सिखाती कि लोग पूर्णतया पापी के रूप में जन्म लेते हों (मत्ती 18:3)। परमेश्वर के प्रेम के प्रस्तावों को लोग ग्रहण कर *सकते हैं* (मत्ती 11:28-30)।

अधिकतर प्रोटैस्टंट जगत ने कैल्विन की प्रीडेस्टिनेशन और टोटल डिपरेविटी की शिक्षाओं को नकार दिया है, परन्तु बहुतों ने उसकी अन्य शिक्षाओं को पकड़े रखा है जो उन शिक्षाओं से निकलीं जिसमें कलीसिया के बाहरी पापी अर्थात गैर मसीही पर पवित्र आत्मा का प्रत्यक्ष कार्य भी शामिल है। शास्त्र के सावधानीपूर्वक अध्ययन से यह प्रकट हो जाएगा कि पवित्र आत्मा कलीसिया के बाहर के पापी पर *आत्मा की प्रेरणा से दिए वचन के द्वारा* उसे उसके पाप के बारे में कायल करके *अप्रत्यक्ष* रूप से कार्य करता है। यीशु ने अपने प्रेरितों को बताया था कि जब वह पवित्र आत्मा भेजेगा तो वह (पवित्र आत्मा) उन्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा और लोगों को पाप के प्रति निरुत्तर अर्थात कायल करेगा

(यूहन्ना 16:7-14)। पिन्तेकुस्त के दिन पवित्र आत्मा आया और सचमुच उसने लोगों को प्रेरित पतरस के आत्मा की प्रेरणा से किए गए प्रचार से पाप के प्रति निरुत्तर किया (प्रेरितों 2:37)। प्रेरितों के काम की पूरी पुस्तक में यही नमूना है।

परमेश्वर के वचन को ''आत्मा की तलवार'' कहा गया है (इफिसियों 6:17; इब्रानियों 4:12)। आत्मा तलवार नहीं है, बल्कि आत्मा के द्वारा इस्तेमाल होने वाला एक औज़ार है। पिन्तेकुस्त के दिन से वह तलवार लोगों के हृदय छेद रही है (प्रेरितों 2:37; 24:25 भी देखिए; रोमियों 3:20; 7:7)।

आत्मा की तलवार की शक्ति को कभी भी कम करके मत आंकें! सत्य हमें स्वतन्त्र करता है (यूहन्ना 8:32; 17:17)। हमें वचन के साथ पवित्र किया जाता है (यूहन्ना 17:17)। हमें वचन के साथ शुद्ध किया जाता है (यूहन्ना 15:3)। सुसमाचार उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है (रोमियों 1:16)। विश्वास वचन से आता है (रोमियों 10:17)। वचन हमें उद्धार के लिए बुद्धिमान बना सकता है (2 तीमुथियुस 3:14, 15)। वचन हमारे प्राणों का उद्धार करने के योग्य है (याकूब 1:21)। हमारे प्राण सत्य के आज्ञापालन से पवित्र किए जाते हैं (1 पतरस 1:22, 23; कुलुस्सियों 1:5)।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में मनपरिवर्तनों के उदाहरणों को जारी रखते हुए, हमें कभी भी कलीसिया के बाहर के पापी पर पवित्र आत्मा का कार्य प्रत्यक्ष नहीं बल्कि वचन के द्वारा होता ही मिलता है (प्रेरितों 8:29-39)।

पवित्र आत्मा के प्रत्यक्ष कार्य की शिक्षा (1) परमेश्वर को पक्षपात करने वाला ठहराती है (प्रेरितों 10:34, 35; 2 पतरस 3:9), (2) पापी (ध्यान दें मत्ती 16:24) और आत्माओं को जीतने वाले (ध्यान दें मरकुस 16:15, 16; 1 कुरिन्थियों 9:16) की व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी कम कर (या बिल्कुल ही समाप्त) देती है, (3) संचार के उस साधन अर्थात वचन के विपरीत है जो आरम्भ में मनुष्य के साथ परमेश्वर ने स्थापित किया। परमेश्वर लोगों को वचन के द्वारा खींचता है (यूहन्ना 6:44, 45)। यदि कलीसिया के बाहर के पापी पर पवित्र आत्मा के प्रत्यक्ष कार्य की बात सत्य है, तो परमेश्वर अपनी ही योजना की अवहेलना कर रहा होगा जिसमें उसने परमेश्वर - मसीह - पवित्र आत्मा - प्रेरित - आत्मा की प्रेरणा से दिया वचन - सारी मनुष्य जाति को क्रमबद्ध किया है।

पवित्र आत्मा मसीहियों के लिए क्या करता है?

मेरा विश्वास है कि पवित्र आत्मा मसीही के लिए वह सब कुछ करता है जो वह उसके लिए नहीं करता जो मसीही नहीं है (ध्यान दें इफिसियों 1:12, 13)। वह परमेश्वर के विश्वासी बालक के जीवन में सक्रियता से कार्य कर सकता है और करता है।

जब हम मसीही बनते हैं (पानी का बपतिस्मा लेने से), तो हमें दान के रूप में पवित्र आत्मा मिलता है (प्रेरितों 2:38; 5:32; गलतियों 4:6)। आत्मा की सामर्थ का यह एक गैर-चमत्कारी प्रदर्शन है, जिसे नये नियम में आत्मा का *वास* कहा गया है (रोमियों 8:9,11; 1 कुरिन्थियों 3:16; 6:19; 2 तीमुथियुस 1:14)। परमेश्वर हमारी सहायता करता

व दृढ़ता के लिए अपने पवित्र आत्मा में से हमें देता है।

कुछ अस्वीकृतियां ये हैं: (1) कोई भी अपने *अहसास* से यह नहीं जान सकता कि पवित्र आत्मा उसमें वास करता है। भावनाएं धोखेबाज़ होती हैं और समय-समय पर बदलती रहती हैं। फिर, पवित्र आत्मा तो एक आत्मा *है,* इसलिए उसे पांच इंद्रियों से परखा नहीं जा सकता। बल्कि, यदि हम बपतिस्मा पाए हुए विश्वासी हैं, तो हम जानते हैं कि पवित्र आत्मा हम में वास करता है क्योंकि *बाइबल* कहती है कि वह हम में है। हम इसे *विश्वास* से मानते हैं (गलतियों 3:14)। (2) पवित्र आत्मा के वास से मिलने वाली आशिषों को वचन के हमारे अध्ययन और उसकी आज्ञा मानने से अलग नहीं किया जा सकता।

सौभाग्य से हमें अपने जीवनों में उसकी आशीष पाने के लिए पवित्र आत्मा के वास के सम्बन्ध में गहराई से समझना ज़रूरी नहीं है। *यदि हम वचन की आज्ञा मानकर आत्मा से सहयोग करते हैं, वह हमें सहायता दे सकता है और देगा और हमें मज़बूत कर सकता है और करेगा भी।* तथापि, कम से कम यह जानना कि वह हमारे लिए क्या करता है, तसल्ली की बात है। मसीहियों के लिए पवित्र आत्मा जो कुछ करता है उसकी थोड़ी सी समीक्षा यह है: (1) हमारे जीवनों में उसकी उपस्थिति हमें परमेश्वर का पुत्र होने का प्रमाण देती है (गलतियों 4:6; 1 यूहन्ना 3:24; 4:13)। (2) स्वर्ग में जाने के लिए वह हमारा बयाना है (इफिसियों 1:13,14)। (3) वह हमें मसीही जीवन जीने में सहायता करता है, प्रार्थना में हमारी सहायता करता है, और हमारे जी उठने में शामिल होगा (रोमियों 8:2,

मसीही लोगों में पवित्र आत्मा का काम

1. वह हमें पाप और मृत्यु की व्यवस्था से स्वतन्त्र करता है (रोमियों 8:2-8)।
2. वह हमारा पुनरुत्थान करेगा (रोमियों 8:11)।
3. वह प्रार्थनाओं में हमारी सहायता करता है और हमारे लिए निवेदन करता है (रोमियों 8:26, 27; इफिसियों 6:18)।
4. वह हमारी अगुआई करता है (रोमियों 8:14)।
5. वह छुटकारे के दिन के लिए बयाने के रूप में हम पर मोहर करता है (2 कुरिन्थियों 1:22; इफिसियों 1:13, 14; 4:30)।
6. वह हमारे साथ संगति रखता है (2 कुरिन्थियों 13:14)।
7. वह हमें पिता के पास पहुंचाता है (इफिसियों 2:18)।
8. वह हमारे भीतरी व्यक्ति को दृढ़ करता है (इफिसियों 3:16)।
9. वह एकता लाता है (इफिसियों 4:3)।
10. वह हमें पवित्र बनाता है (2 थिस्सलुनीकियों 2:13)।

ओयन औलब्रिट से रूपान्तरित किया गया,
द होली स्पिरिट

11, 13, 26, 27, आदि)।

संक्षेप में, पवित्र आत्मा के वास की भूमिका, हमारे जीवनों में ''आत्मा का फल'' उपजाने में हमारी सहायता के लिए है (गलतियों 5:22, 23)।

> हे प्रियो, आत्मा के वास का अन्तिम उद्देश्य लोगों में मसीह के व्यक्तित्व की सुन्दरता तथा महिमा को बढ़ाना है। यदि पृथ्वी पर स्वर्गीय फूल चाहिए, तो कंद आपको स्वर्ग से ही आयात करने होंगे।

एक मसीही आराधना में ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर नहीं, बल्कि अपने जीवन के द्वारा जो मसीह के जीवन से मेल खाता है दिखाता है कि वह आत्मा से परिपूर्ण है!

सारांश

पिता और पुत्र की तरह ही, पवित्र आत्मा भी आपके उद्धार के बारे में काफ़ी रुचि लेता है (प्रकाशितवाक्य 22:17)। आत्मा का विरोध न करें, बल्कि जो कुछ वह आपको करने के लिए बाइबल के द्वारा कहता है, उसे करें। यदि आपको बपतिस्मा लेने की आवश्यकता है, तो आप स्वयं को वचन के द्वारा पवित्र आत्मा को समझाने दें। यदि आप परमेश्वर की संतान हैं, तो वचन की आज्ञा मानकर आत्मा के साथ सहयोग करें। फिर वह आपके जीवन में आशीष दे सकता है!